मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

वर्ष - 20 अंक - 9
(जुलाई - 2024)
Vol - XX Issue No - IX
(July - 2024)

मूल्य: 100 /- रूपये
डाक पंजीयन क्र. मालवा डिवीजन - L2/65/RNP/399/2024-2026

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

Indexed in International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed in the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

वर्ष-20 अंक - 9 , जुलाई- 2024
Vol - XX, Issue No. IX
July - 2024
Impact Factor - 8.0

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
कुलानुशासक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

संपादक
डॉ. मोहन बैरागी
अक्षरवार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक मंडल

प्रो. जगदीशचन्द्र शर्मा, प्राध्यापक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. राजश्री शर्मा, प्राध्यापक
माधव महाविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. डी. डी. बेदिया, विभागाध्यक्ष
पं. जवाहर लाल नेहरू व्यवसाय प्रबंध
संस्थान, व आईक्यूएसी प्रभारी, विक्रम
युनिवर्सिटी, उज्जैन, मप्र.
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' जनसंपर्क
अधिकारी, आरजीपीवी, भोपाल, मप्र.
प्रो. उमापति दिक्षित, प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
प्रो. मोहसिन खान, विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रायगढ़, महाराष्ट्र
डॉ. दिग्विजय शर्मा, सहायक प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
डॉ. भेरूलाल मालवीय, सहायक प्राध्यापक
शा. नवीन महाविद्यालय, शाजापुर, मप्र.
डॉ. उपेन्द्र भार्गव, सहायक प्राध्यापक
महर्षि पाणिनि विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
डॉ. रूपाली सारये, सहा.प्राध्यापक
भाषा विभाग, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना, एसो. प्रोफेसर,
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम वि.वि, इंदौर, मप्र.
डॉ. पराक्रम सिंह, के.हि.सं., दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), डॉ. रत्ना कुशवाह, (अंडमान निकोबाद), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र. से शोध, प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी, अवार्ड आदि के लिए अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्ण बसंती शैक्षणिक एवं सामाजिक जनकल्याण समिति, उज्जैन, मप्र. एम ओ यू हस्ताक्षरित।

नोटः- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।// शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

» 'अति ही गंभीर मति सरस कबीर हियो' संत कबीर और उनका वैश्विक सन्देश
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा 07

» उत्तर - आलोचनावाद
अमर सिंह 11

» रमेशचन्द्र शाह के कथा-साहित्य में वरिष्ठ पीढ़ी का कथा-बोध
राज कुमार 14

» अकबर के शासन काल में उत्मा वर्ग की भूमिका
हरिहर प्रसाद 17

» निर्मल वर्मा की कहानियों में प्रेम एवं संवेदना
रिंकी यादव, डॉ. कृष्णकान्त चन्द्रा 19

» "संगेय राघव की कहानी 'गदल' में स्त्री दृष्टिकोण "
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार 21

» बौद्ध स्तूपों पर अंकित मांगलिक प्रतीकों का समीक्षात्मक अध्ययन
जूही सिंह, प्रो. विजय बहादुर सिंह यादव 23

» अज्ञेय के उपन्यासों में व्यक्तिवादी स्वर
डॉ. निधि अग्रवाल 26

» तीसरे लिंग के रूप में ट्रांसजेंडर समुदाय की सामाजिक स्थिति
रौशनी कुमारी, डॉ. सरिता कुमारी 29

» विद्यालयों में खेल का महत्व
डॉ. कृष्ण कुमार तीवारी, शैलेन्द्र प्रताप सिंह 32

» 'नसीम फिल्म में किस्सागोई'
पवन कुमार 35

» ज्ञानकर्मो में चरितार्थ होता है - श्रीमद्भगवद्गीता
डॉ. अर्चना तिवारी 40

» स्वाधीनता के अज्ञान वीर
शाहिदा, प्रो. (डॉ.) मनीष कांत जैन 45

» सामासिक सांस्कृतिक के संवाहक : भाषा साहित्य और मीडिया
डॉ. महादेवी गुरव 49

» मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था एक सांस्कृतिक एवं धार्मिक द्वन्द्व : कतिपय विश्लेषण
डॉ.सुरेन्द्र कुमार, डॉ. बाल गोविन्द सिंह 52

» असुर जनजाति की सामाजिक - सांस्कृतिक दशा और जन माध्यम
नवीन कुमार तीवारी, डॉ. साकेत रमण 55

» नागपुर के भोसला शासकों की प्रशासनिक व्यवस्था
विजय गुर्वे, डॉ. महेन्द्र गिरि 59

» अनूपपुर जिले में पर्यटन उद्योग की संभावनाएँ : एक भौगोलिक विष्लेषण
देवेन्द्र धुर्वे, डॉ. हीरा सिंह गोंड, राज कुमार सिंह 64

» पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताओं में स्वातंत्र्य भावना
शिवशंकर राजवाड़े 69

» नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा का स्वरूप
रमा साहू 73

» ग्रामीण विकास में डिजिटल अर्थव्यवस्था की भूमिका
सुमन मीणा 77

» 'कृष्णा सोबती के औपन्यासिक पात्र एवं उनकी अभिव्यक्ति का भाषाई ताना - बाना'
नसरीन बानो 80

» दीक्षा एप्प के माध्यम से संचालित शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की अभिरूचि : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
संध्या पौनिया, प्रो. ललित मोहन शर्मा 83

» भारत का संपोषणीय विकास और अन्त्योदय योजनाएँ
अंजू पाण्डेय 87

» कमलेश्वर के उपन्यास कितने पाकिस्तान में ऐतिहासिक चेतना
सुनीता कुमारी 89

» सुषमा मुनीन्द्र की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना
अनिता नाईक, डॉ. प्रतिभा जोशी 93

» छायावाद एवं हिमवंत कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल
कीर्ति गिल 97

» डॉ. सुरेन्द्र दुबे के व्यंग्य की सामाजिक-राजनीतिक सार्थकता
झारेन्द्र कुमार 100

» प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के महत्व पर एक संक्षिप्त विश्लेषण
अश्वनी मिश्रा, डॉ. ओ. पी. अरजरिया 103

» स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता का भाषायी वैशिष्ट्य
सत्यनारायण मीणा 106

» हिंदी लघुकथा - विश्लेषण एवं विमर्श
श्रीमती रेखा श्रीवास्तव, डॉ. मौसमी परिहार 109

» उन्माद
दिव्या चौरड़िया 115

» नमिता सिंह के कथा-साहित्य के रचनात्मक वैशिष्ट्य
अनुभा कुमारी 117

» व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयाम
डॉ. अमित कुमार ताम्रकार 120

» नाट्य कला का स्कूली शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में समायोजन
डॉ. दीपक प्रसाद 126

» मालगुडी डेज की कहानी में नेत्रहीन भिखारी और पालतू कुत्ता में मानवीय संवेदना
सुनील कुमार, डॉ. दिलीप राम 131

» फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में किसान विमर्श ('मैला आँचल' और 'परती-कथा' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)
डॉ. वरप्रसाद वासाला 133
» आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में डॉ. मनीराम वर्मा का योगदान
प्रमोद कुमार वर्मा 136
» समकालीन हिंदी काव्य में राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना
प्रज्योत पांडुरंग गांवकर 141
» व्यक्तित्व सृजन में चरित्र की महति भूमिका
डॉ. चन्द्रशेखर सिंह 144
» पाषाणकाल के उपकरणों का एक अध्ययन
राजेश कुमार 147
» कुषाण कालीन स्तूप एवं विहार
डॉ. गुरमीत सिंह 150
» समकालीन हिंदी कविता तथा कृषक जीवन
अभिषेक कुमार उपाध्याय 153
» Larvae at Large : The Effect of Temperature on Barber pole Worm Third Stage Larval Development
Dr. Kanhaiya Mahour 157
» "Reviving a Forgotten hero : The legacy of Dr. Diwan Singh Kalepani"
Gagandeep Singh 160
» Facing the Inevitable : The Urgency of Addressing Global Warming and Climate Change
Dr. Antima Baldwa 163
» Effect of Yogic Practice on Stress Management
Dr. Aarti Pal 168
» Transformating Ties : The Evolution of UAE-India Relations in the 21 Century
Mohit Kalra 176
» Maharaja Gulab SIngh and Foundation of the modern State of Jammu Kashmir
Dr. Parvesh 181

संपाद

कह स
काम
अब
अंतर्दे
इसव
चुटी
कल
कर
गए
ख
से
ज
ट
व

शोध आलेख प्रकाशन संबंधी नियम

शोध आलेख 2500 से 5000 शब्दों का होकर यूनिकोड मंगल अथवा कृतिदेव 10 में 12 के फॉन्ट साइज में ही भेजें। शोध आलेख एपीए एमएलए फार्मेट में होना आवश्यक होकर फुटनोट व रिफ्रेंसेस के साथ भेजना आवश्यक है। अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें।

पुस्तकों से संदर्भ देने के लिए क्रम

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम; पुस्तक का शीर्षक (इटैलिक्स में; प्रकाशक का नाम और पूरा पता (प्रकाशन का वर्ष) कोष्ठक में; पृष्ठ संख्या ....।

द्विवेदी,हजारी प्रसाद, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, चौदहवीं आवृति, 2014, पृ. 108

पत्रिकाओं के संदर्भ

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। लेख का शीर्षक। जर्नल का शीर्षक/नाम (इटैलिक्स मे)। वॉल्यूम। संस्करण (महिना, वर्ष): पृष्ठ संख्या। प्रकाशन मीडिया।

वेबसाइट के उद्धरण का प्रारूप

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। ''पृष्ठ का शीर्षक।''
क्षेत्र शीर्षक। (साईट) प्रकाशित करने वाली कंपनी। (युआरएल) तथा सर्च डेट (अभिगमन तिथि)।
पुस्तक, पत्रिका, आवधिक, वेबसाइट आदि) के शीर्षक को इटैलिक में लिखें।
शोध आलेख के साथ प्लेगरिज़्म रिपोर्ट / स्व घोषणा पत्र (आलेख की मौलिकता व अप्रकाशित होने के संदर्भ में) अवश्य भेजें।
आलेख की वर्ड और पीडीएफ दोनों फाइल् अनिवार्य रूप से भेजें।
शोध आलेख प्रत्येक माह की 7 तारीख तक आगामी माह के अंक के लिए स्वीकार्य होंगे।
शोध आलेख का प्रकाशन रिव्यू कमेटी द्वारा अनुसंशा के आधार पर किया जावेगा।

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 8.0
Vol - XX, Issue - IX, July - 2024

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

छायावाद एवं हिमवंत कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल

कीर्ति गिल

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हि. क. च. ब. राजकीय महाविद्यालय, नागनाथ पोखरी, चमोली, उत्तराखंड

साहित्य का समाज के साथ गहरा संबंध होता है प्रत्येक सभ्य समाज को विरेचित करने का कार्य साहित्य का है युवा मन की स्वच्छंद भावनाओं और उनके विकास के गतिशील मानस चित्र ,राष्ट्रीय स्वाधीनता और व्यक्ति स्वतंत्रता का स्वर तथा जन जागरण की विश्व व्यापी लहर को संवार कर प्रवाह मान बनाने का दायित्व साहित्य ने निभाया है। सहानुभूति, कल्पना ,प्रकृति का मानवीकरण, रहस्यवाद, मै शैली से संपन्न छायावादी काव्य ने व्यक्ति की स्वाधीनता की भावना से उत्पन्न सौंदर्य को ही संपूर्ण समाज की स्वाधीनता सौंदर्य की अभिव्यक्ति बनाकर प्रस्तुत किया। छायावाद का सारा काव्य सौंदर्य व्यक्ति स्वाधीनता का सौंदर्य है छायावाद का आरंभ सामान्यत 1920 ई के आसपास माना जाता है छायावादी कवि वस्तुओं को देखने की दृष्टि असाधारण है छायावाद की किसी विचित्र प्रकाशन रीति के कारण उसके लिए 'मिस्टिसिजम' शब्द प्रयुक्त हुआ कुछ समय बाद छायावाद के लिए 'रोमांटिसिजम' शब्द का भी प्रयोग हुआ इसी के आधार पर स्वच्छंदतावाद शब्द का प्रयोग किया गया छायावाद में विदेशी पराधीनता एव स्वदेशी जीर्ण शीर्ण विचारधाराओं से मुक्ति का तीव्र स्वर है जयशंकर प्रसाद,सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा ,सुमित्रानंदन पंत जैसे महान कवियों ने छायावादी काव्य को आधुनिक हिंदी कविता का उत्कर्ष काल कहकर स्थापित किया छायावाद में भावनाओं की ही सत्ता है कुल मिलाकर छायावाद प्रमुख कवियों या आधार स्तंभों में इन चार कवियों की गणना होती है यह अलग बात है कि इन कविता चार कवियों के साथ-साथ छायावाद के अन्य कवियों में उत्तर छायावादी कवि या गौण छायावादी कवि कहकर अन्य कवियों जैसे माखनलाल चतुर्वेदी ,रामकुमार वर्मा ,जानकी वल्लभ शास्त्री, हरि कृष्ण प्रेमी, तारा पांडे ,मुकुंडधार पांडे, इला चंद्र जोशी आदि अन्य कवियों को भी समाविष्ट किया जाता है।

छायावादी काव्य की समस्त विशेषताओं को अपने काव्य में संजोए हुए एक महान कवि हुए हैं हिमवंत कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल जिनके काव्य में छायावाद के अग्रदूत जयशंकर प्रसाद की तरह राष्ट्रीय जागृति का स्वर है तो सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की तरह मुक्ति एवं आत्म प्रसार की आकांक्षा है ,महादेवी वर्मा की तरह विरह वेदना एव प्रेमभाव है तो सुमित्रानंदन पंत की तरह प्रकृति के प्रति असीम प्रेमभाव। छायावाद के चारों आधार स्तंभों की विशेषताओं को अपने काव्य में समाहित किए हुए भी यह कवि हिंदी साहित्य जगत में पर्याप्त प्रसिद्ध ना प्राप्त कर सका इसका कारण कभी बर्तवाल स्वयं लिखते हैं-'मुझे इस बात का दुख नहीं की कविता के प्रसिद्ध उपासकों में मेरी गिनती नहीं हुई क्योंकि मुझे समय नहीं मिला'। हिमालय की कंदराओं में जन्मे हिंदी के जाज्लयमान नक्षत्रकवि चंद्र कुंवर बर्तवाल की तुलना इसी कारण अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि जॉन कीट्स के साथ की जाती है क्योंकि मात्र 28 वर्ष की अल्पायु में ही इस कवि ने छह रोग की भयानक पीडा को झेलते हुए जो कुछ लिख डाला वह हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। चंद्र कुंवर बर्तवाल का जन्म 20 अगस्त 1919 को जिला चमोली गढ़वाल पट्टी तल्ला नागपुर के मालकोटी गांव में हुआ था इनके पिता का नाम ठाकुर भूपाल सिंह एवं माता का नाम जानकी देवी था। तल्ला नागपुर प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है मालकोटी गांव घाटी में बसने के कारण प्रकृति की गोद में हंसता हुआ सा प्रतीत होता है नैनी देवी और कार्तिक स्वामी के गिरी शिखर की नंदन छाया में बसा समूचा तल्ला नागपुर प्राकृतिक सुषमा के लिए प्रसिद्ध है चंद्र कुंवर बर्तवाल का बाल्य काल प्रकृति के इन्हीं रंग बिरंगी दृश्य के उन्मद वातावरण में बीता। इनकी प्रारंभिक शिक्षा नागनाथ पोखरी चमोली में हुई और हाई स्कूल की परीक्षा इन्होंने म्यसमोर हाई स्कूल पौड़ी से उत्तीर्ण की। बी0ए की शिक्षा इन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की और उसके बाद एम 0ए करने के लिए लखनऊ चले गए किंतु स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण वह घर वापस लौट आए और अगस्त्य मुनि में हाई स्कूल में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य करने लगे लेकिन स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट आती रही क्षय रोग की भयंकर पीड़ा में भी यह निरंतर लेखन कार्य करते रहे और 14 सितंबर 1947 को इनका देहांत हो गया। इनका लिखा साहित्य इन्हें भारतीय साहित्य में अमर कर गया।रोग की अवस्था में प्रकृति ही कवि की सहायक सहचारी थी कवि ने अपने हिमालय के जनजीवन के संगी साथी पर्वत ,शिखर ,घाटी, वृक्ष बर्फ,नदी ,जलधारा, पत्थर, पगडडी ,वनमेघ, इंद्रधनुष, काफल पक्कू, मधुरित हेमंत, शिशिर,ग्वाला,वन देवी, वन देवता आदि सभी को अपनी कविता में चित्रित किया है चंद्र कुंवर बर्तवाल ने 'मेरा परिचय' कविता में अपने पूरे जीवन को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त कर दिया है-

जीवन ने मुझको प्रभात की भांति खिलाया
आशाओं ने मुझको कुसुम की भांति हंसाया
संध्या ने कर दिया चकित मुझको शोभा से
स्निग्ध मरण ने मुझे निशा की भांति सुलाया

इसी प्रकार

अपने उद्गम को लौट रही अब बहना छोड़ नदी मेरी
छोटे से अणुमें डूब रही अब जीवन की पृथ्वी मेरी
आंखों में सुख से पिघल-पिघलहोठों में स्मिति भरता भरता
मेरा जीवन धीरे-धीरे इस सुंदर घाटी में मरता।

प्रकृति बर्तवाल जी का जीवन हैप्रकृति के माध्यम से ही उन्होंने अपने जीवन के प्रेम पीड़ा निराशा आदि भावों को अभिव्यक्ति दी है क्योंकि रोग की पीड़ा में एकमात्र प्रकृति ही कवि की संगिनी है नियति ने चंद्र कुंवर बर्तवाल को आयु के सिर्फ 28 वर्ष 24 दिन दिए थे। कवि वर्तमान का समय छायावाद का

उत्कर्ष काल था किंतु कभी अपनी लंबी बीमारी के कारण जीवन मृत्यु के साथ संघर्ष करते हुए लेखन कार्य कर रहा था चंद्र कुंवर बर्तवाल की रचनाओं का अध्ययन अध्यापन करते हुए मैंने जाना कि कवि छायावादी एवं प्रगतिवादी काव्य के प्रस्तुता है उन्होंने अपना पूरा जीवन ही हिमगिरी की माधुरी को अर्पित कर दिया प्रकृति की गोद में जन्मा यह कवि प्रकृति की गोद में रहकर विशाल हिमालय को अपनी कविता का आधार स्तंभ बना प्रकृति के रमणीय चित्र उकेरता रहा सृजनात्मक प्रतिभा के धनी कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल जी के काव्य पर प्रकृति के सहचार्य ने अमित छाप छोड़ी थी और प्रकृति का सौंदर्य ही उनकी सृजन प्रेरणा था छायावाद की सर्व प्रमुख विशेषता भी यही प्रकृति प्रेम है प्रकृति के सानिध्य में छायावादी कवियों को मुक्ति एवं स्वच्छंदता के दर्शन हुए और यही प्रकृति प्रेम का मुख्य कारण बना यही प्रकृति प्रेम आगे चलकर देश प्रेम का भी रूप ले लेता है। हिमालय शीर्षक कविता में कवि हिमालय को ऋषि के रूप में प्रस्तुत कर अपनी आस्था प्रकट करता है और कहता है

शोभित चंद्रकला मस्तक पर
भस्म विभूषित नग्न कलेवर
कटी पर कृष्णा गजानिन सा घन
गिरती घोर घोष कर पद पर
वज्र घटासीदीप्ति सुरधनी

एक भस्म लपेटेतपस्वी के रूप में कवि ने हिमालय का बहुत ही सुंदरभाव चित्र उतारा है इसी प्रकार हिमालय वृक्ष देवदार ,नदियां , वसंत ऋतु में पुष्प पक्षियों, जीव जंतुओं का कवि ने बहुत ही सृजनात्मक चित्रण अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अमूर्त सौंदर्य जो निर्विकार रूप से हिमालय की असीम प्रसार में बिखरा पड़ा है श्री चंद्र कुंवर बर्तवाल के लिए आश्चर्य, प्रेम ,हास्य का उद्दीपक ही नहीं है श्रद्धा की वस्तुभी है इस प्राकृतिक सौंदर्य को वह अपना सारा जीवन ही
अर्पित कर देना चाहते हैं
न जाने कितने शत जीवन कियेमैंने तुमको अर्पित
माधुरी मेरे हिमगिरी की
देवदार के वनों में फैले प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कई कहते हैं

अलको का बांधे बंधन है
नीला देव दारू का वन है
दूर कहीं गूंजार गूंजती
खगबाला कोई ना बोलती
सूनी सड़क अकेला पर्वत
छाया में कर रहा शयन है
नीला देव दारू का वन है

पहाड़ों की एकांत सौंदर्य का इतना सुंदर चित्र कवि ने उपरोक्त पंक्ति में प्रस्तुत किया है की पहाड़ी सौंदर्य आंखों के सामने संजीव होता है

है वसंत की दोपहरी चुपचाप खड़े हैं
तरुण चीड़ के पेड़ नयन मुकूलित कर पृथ्वी
पड़ी हुई है नए मधु के पत्रों की
विरलऔर कोमल छाया में निज चरणों को
फैला कोमलतम आतप के नीचे सुंदर

चंद्र कुंवर बर्तवाल दृश्य के वर्णनके साथ-साथ भावना का कुछ ऐसा समन्वय करते हैं की चित्र यथार्थ होते हुए भी दृश्य अपने रंगों और दृश्य सुंदरता के लिए नहीं वरन अपनी भाव में आत्मा के कारण और अधिक मनोरम हो जाता है इसी प्रकार बर्तवाल जी ने ऋतुओं पर सुंदर कविताएं लिखी हैं ऋतु का सौंदर्य पर्वतीय वातावरण के कारण और अधिक बढ जाता है वर्षा ऋतु पर लिखी उनकी यह सुंदर पंक्तियां उद्धृत हैं।

घन गर्जन सुन छितरदौडती गौसमूह सी बदली
ग्वाले की लकुटी सी रह रह चमक रही है बिजली
नाव में वर्षा की छविछाई और में पावस ऋतु आई
मेघना के गदगद स्वर सुनकर उर में पावस ऋतु आई।

हेमंत ऋतु का विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से कवि ने हेमंत प्रात: कविता में वर्णन किया है ऋतुओं को मानवीकरण अलंकार का प्रयोग कर कवि ने सजीव साकार मनुष्य रूप में प्रस्तुत कर दिया है शरद ऋतु की सुंदरता का वर्णन करते हुए कई कहते हैं

आ गया शरद पृथ्वी में लो
हंस रहा चंद्रमा पुलकित हो
तारों से अब सज गया गगन
सज गई आंसुओं से चितवन
ओससजाती दूर्वा को

इसी प्रकार प्राकृतिक सौंदर्य के कुछ अन्य चित्र जैसे

अब वृन्तगए फूलों से झर
हो गई दिशाएं गीत मुखर
हो गए हरित अबवन प्रांतर
पृथ्वी पर बिछ गई सुघर
दूर्वा की अब कोमल चादर

प्रकृति के सौंदर्य को ,पुष्पों को भ्रमरो को, दूर्वा को इतनी तन्मयता से प्रेम करने वाला कवि संस्कृत साहित्य में कालिदास और अंग्रेजी साहित्य में वर्ड्सवर्थ के रूप में ही पाया जा सकता है

बहने लगी पवन हिमगिरी की
शिखरों से आनंद भरी
होने लगी सजग सुरधुनी की
लहरेहिम से ठिठरी

हिमालय की गोद से बहने वाली नदियों पर कवि वर्तमान इतना मोहित हुए हैं कि शायद ही कोई अन्य कई हुआ होगा अपने उद्यम प्रवाह में इस प्रकार आनंद से बहती हुई हम के कारण ठहरती हुई लहरों का संजीव चित्रांकन कवि के द्वारा किया गया है

यह बांज पुराने पर्वत से
यह हिंमसा ठंडा पानी

हिमालय प्रदेश की सुंदरता को बढ़ाने वाले वृक्षों बांज देवदार ,बुरास चीड़ पर कवि ने सुंदर कविताएं लिखी हैं

हां उन चीड़ोके नीचे मैं भी बैठा था
जब संध्या थी पर्वत पर सोने सी गलती।

ओ ग्रीष्म आग हंसो पीड़ित संसार करो
झरनों को शुष्क करो नदियों का नीर हरो
पत्रों का हृदय सोखवृक्षों को चूम चूम
विराट शैलोको ज्वाला से भस्म करो

ग्रीष्म सबके प्राणों को सूखने लगती है अपनी अग्नि से क्रूर हास्य हस्ती हुई सभी को भस्म करने लगती है नदियों का नीर हरने लगती है ग्रीष्मकालीन संध्याओं के सौंदर्य पर भी कवि की दृष्टि गई है

सोने की रेखाओं से घिर गए दिवाकर
पश्चिम में लहराया घन परिमल का सागर

केसर से भर गए मेघ केसर में सनकर
लगी उमडने नभ से संध्या पवन मनोहर

सूर्य की किरणे सोने की रेखाओं के समान सूर्य को घेर लेती है आकाश के बादलकेसर से भर जाते है और संध्या बहुत ही मनोहर प्रतीत होती है इसी प्रकार घनघर्जन वर्षा ,संगीत, रैमासी के पुष्प ,चींटी, गंगा ,हिम माधुरी आदि अनेको कविताए गिनवाई जा सकती है जिसमे कई ने प्रकृति की नवीन भंगीमा ,नवीन दृश्य का मार्मिक एवं चित्रात्मक वर्णन किया है। हिंदी साहित्य का अध्ययन करते हुए जैसे ही पाठक छायावाद की सीमा मे प्रवेश करता है तो वह देखता है कि कवि निर्वैतिकता का सारा आवरण उतार कर एक आत्मीय की तरह निजी ढंग से बाते कर कर रहा है कवि चंद्र कुंवरबर्तवाल जी ने भी अपनी कविताओ मे 'मै शैली' का प्रयोग कर अपनी आत्म वेदना पीड़ा को स्वर दिया है कवि ने तटस्थता का परित्याग कर अपने प्रेम विरह रोग की भीषण पीड़ा, आशाओ, निराशाओ को प्रकृति का सहारा लेकर बहुत ही मार्मिक ढंग से वर्णित किया है अपने प्रणय संबध एव रोग के विषय में बात करते हुए वे तनिक भी संकोच का अनुभव नही करते है बहुत ही साहस के साथ अपनी बात रखते है ऐसा शहर छायावाद की व्रहत चतुष्टि मे ही दृष्टिगोचर होता है विशेष रूप से सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी में।

मै जाता हू सपनो मे फिर उस प्रिय वन में
जहा मिली थी मुझको वहा हस्ती बचपन में

आतरिक भावो की सहज अभिव्यक्ति के रूप मेंनिसृत यह कसक भरी पंक्तिया अतस्तल को छू लेती हैं यौवन काल की उमंग में कवि के मन में किसी रमणी ने अपनी छवि बिखेरी थी कवि ने अपनी कविताओं में उसे रमणी को बहुत ही सुंदर भावो के साथ अभिव्यक्त किया है उससे वार्तालाप करते हुए पर्वत प्रदेश के हर सौंदर्य को स्पर्श किया है वह अपनी प्रेमिका पर सर्वस्व समर्पित करना चाहते हैं पर नियति के कठोर न्याय के सामने विवश हो जाते हैं करण प्रेमभाव धीरे-धीरे निराशावाद की तरफ परिणत होने लगता है जो कई यौवन की उमग मे आकर कहता है

मेरे पास आज इतना धन है देने को
नए फूल है पांव के नीचे बिछने को

वही कविरोग के सामनेयुवावस्था में इतना असहाय हो जाता है की कहता है

इस जीवन में कभी न सुख की छाया आई
इस यौवन ने चाहना वह पूरी कर पाई
मुझे ना कुछ संदेश कहीं से नीरदलाया
मुझे ना हंसो ने सुख के संवाद सुनाए
मेरी बीती यूं ही सुर दुर्लभ तरुणाई
इस यौवन में ने चाह ना वह पूरी कर पाई

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की तरह ही कवि काजीवन बहुत संघर्षमय था इसी कारण कई की कविताओं में भी उन्हीं की तरह संघर्ष निराशा का मिला-जुला भाव देखने को मिलता है पर कई इस निराशा से हारता नहीं है बहुत दुख के क्षणों में भी संसार के सुख की कामना करता है

हृदय प्राण ने जब चाहा था तब ना मिले तुम
अब रुख हो गया हृदय सुखा जीवन द्रुम
जीवन में इतना अंधकार उफ प्राणों पर यह असहभार
चरती मेरे पास में बंधी हुई
आंसू बरसाती खोज रही
यह आंखें नभ में ज्योति द्वार

कविताएं कवि की संवेदनशीलता को वास्तविक एवं नये ढंग से उद्घाटित करती हैं। कवि अपने जीवन के दुखों से तो पीड़ित है किंतु समाज की पीड़ा भी कई को कम व्यथित नहीं करती है मार्क्सवाद से प्रभावित उनकी रचना ककड़ पत्थर समाज की शोषित वर्ग की व्यथा को व्यक्त करती है समाज में पहली असमानता कवि को परेशान करती है जातिवाद धर्मवाद गरीब और अमीर के बीच का भेद कवि को सदैव व्यथित करता रहा है कवि ने समाज में फैली रूढ़ियों और विसंगतियों पर गहरी चोट की है समाज के प्रति कवि की संवेदनशीलता राष्ट्र प्रेम के रूप में सामने आती है। नवीन कविता रावण दहन, सौगंध, मैकाले के खिलौने ,ककड़ पत्थर ,अल्लाह की जबान आदि कविताओं में कवि की संवेदनशीलता व्यक्त होती है

उठो उठो ओ स्वदेश ओ स्वदेशउठो उठो
खुला कभी का प्रभात खुली सभी और रात
खींच रहा राह कर्म यत्न करो उठो जुटो
छोटा जो आज पड़ा होगा कल वही बड़ा

बर्तवाल जी की कविताओं में समग्रता प्रियतमा से मिलने की अमर प्रतीक्षा पीड़ा वह आनंद दोनों ही अनुभूतियों के बीच बहने वाला उनका काव्य बहुत ही मधुर है कवि को काव्य में जो भाव एवं संवेदना है लौकिक प्रेम अनुभूति से अलौकिक प्रेम अनुभूति की राष्ट्रवादी अनुभूति को स्पर्श करती है और प्रेम श्रद्धा का विषय बन पवित्रता की पावन भूमि पर स्थापित हो जाता है हिमदन कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल सौंदर्य के कवि थे कवि की दृष्टि बहुत ही व्यापक थी उनकी रचनाओं में छायावाद की झांकी मिलती है एवं प्रगतिवाद के भी लक्षण देखने को मिलते हैं प्रकृति और प्रेम के साथ-साथ ही राष्ट्रीय जागरण एवं स्वतंत्रता आंदोलन एवं सामाजिक बदलाव के प्रति भी उनकी बहुत ही व्यापक और गहरी सोच थी यही कारण है कि कई ने समाज एवं प्रकृति के छोटे से छोटे विषय को भी अपनी कविता का विषय बनाया है ताकि समाज में बदलाव लाया जा सके और सभी का जीवन सुखी और सफल हो। भारतीय मनिषियों की तरह बर्तवाल जी की सोच वसुदेव कुटुंबकम की थी वह किसी भी प्रकार के भेदभाव एवं अन्याय के विरोधी थे यही कारण है की अन्य छायावादी कवियों की तरह ही कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल जी के काव्य का काव्य का प्रारंभ प्रकृति प्रेम से हुआ लेकिन अंत विश्व कल्याण व विश्व शांति की प्रवृत्ति और संकल्प व कामना के साथ होता है।

शांति शांति सब के जीवन में शांति व्याप्त हो
शांति शांति सबको जीवन में शांति प्राप्त हो
दुखी ना कोई रहे कहीं पृथ्वी के ऊपर
विपुल शांति से ही पूर्ण सबके उर अंतर
विपुल शांति में गीत कथा मेरी समाप्त हो
शांति शांति सबको जीवन में शांति प्राप्त हो।

संदर्भ सूची:-

1. चंद्रकुंवर बर्तवाल संपूर्ण काव्य साहित्य : डॉ योगम्बर सिंह बर्तवाल- चंद्र कुंवर बर्तवाल शोध संस्थान उत्तराखंड एवं समय साक्ष्य
2. छायावाद : डॉ नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन
3. चंद्र कुंवर बर्तवाल की कविताएं : हरेंद्र सिंह असवाल : स्वराज प्रकाशन
4. चंद्रकुवर बर्तवाल का जीवन दर्शन : योगम्बर सिंह बर्तवाल :चंद्रकुंवर बर्तवाल शोध संस्थान उत्तराखंड एवं समय साक्ष्य
5. प्रकृति के कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल : जगमोहन आजाद : बिनसर पब्लिकेशन देहरादून उत्तराखंड
6. भारतीय साहित्य के निर्माता चंद्र कुंवर बर्तवाल : डॉ उमाशंकर सतीश